

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का युवाओं पर प्रभाव: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

- डॉ. अंजू चौधरी

सहायक प्रोफेसर-समाजशास्त्र,
एस.एस.वी पी.जी कॉलेज, हापुड

- श्रीमती अनु रानी

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
रानी भाग्यवती देवी महिला महाविद्यालय बिजनौर

*Received Article: 12/07/2025

*Edited Article: 20/07/2025

*Accepted Article:25/07/2025

सारांश (Abstract):

वर्तमान युग को तकनीकी क्रांति का युग कहा जा सकता है, युवा वर्ग पर इसका प्रभाव अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। इस शोध पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence -AI) युवाओं के जीवन, सोच, कार्यशैली और सामाजिक संबंधों पर किस प्रकार प्रभाव डाल रही है। तकनीकी युग में अख एक सशक्त उपकरण बन चुका है, जो शिक्षा, रोजगार, मानसिक स्वास्थ्य, और सामाजिक संवाद जैसे क्षेत्रों में युवाओं को सीधे प्रभावित कर रहा है। इस शोध में गुणात्मक व मात्रात्मक दोनों विधियों का उपयोग करते हुए विभिन्न आयु वर्गों के युवाओं पर AI के सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण किया गया है।

कुंजी शब्द: कृत्रिम बुद्धिमत्ता, शिक्षा, रोजगार, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक संवाद

परिचय (Introduction):

कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक ऐसी तकनीक है जो मशीनों को मनुष्यों के समान सोचने, सीखने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। आज का युवा वर्ग इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों से जुड़ा हुआ है और AI आधारित तकनीकों जैसे चैटबॉट्स, स्मार्टफोन, वर्चुअल असिस्टेंट्स, सोशल मीडिया एल्गोरिथ्म, और ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म से निरंतर संपर्क में है। वर्तमान युग को तकनीकी क्रांति का युग कहा जा सकता है, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) समाज के प्रत्येक क्षेत्र में गहरा प्रभाव छोड़ रही है। विशेष रूप से युवा वर्ग पर इसका प्रभाव अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। यह शोधपत्र युवाओं के शिक्षा, रोजगार, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक व्यवहार और निर्णय क्षमता जैसे क्षेत्रों पर AI के प्रभाव का विश्लेषण करता है। AI आधारित प्लेटफॉर्म जैसे कि चैटबॉट्स, अनुकूलनशील शिक्षण ऐप्स, करियर गाइडेंस टूल्स आदि ने युवाओं के सीखने और सोचने के तरीकों में बदलाव लाया है। दूसरी ओर, सोशल मीडिया एल्गोरिथ्म और वर्चुअल इंटेलिजेंस के अत्यधिक उपयोग से युवाओं में आत्मकेन्द्रिता, तात्कालिकता की आदत, और सामाजिक अलगाव की प्रवृत्ति भी देखी गई है। यह शोध न केवल AI के सकारात्मक पहलुओं को उजागर करता है, बल्कि इसके संभावित खतरों और नैतिक दुविधाओं पर भी प्रकाश डालता है।

निष्कर्षतः, यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का संतुलित और नैतिक उपयोग सुनिश्चित किया जाए, तो यह युवा पीढ़ी को अधिक सक्षम, सशक्त और जागरूक बना सकती है।

साहित्य समीक्षा - कृत्रिम बुद्धिमत्ता और युवा

गोयल, डी., खेरानी, ए. एवं सोनी, जी. (२०२४) इस शोध का उद्देश्य यह था कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के समाज के विभिन्न क्षेत्रों- विशेषकर शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और सार्वजनिक सेवाओं- पर पड़ने वाले प्रभावों का समग्र अध्ययन किया जाए। अध्ययन का मुख्य फोकस यह था कि AI का सामाजिक संरचनाओं, युवाओं के रोजगार, और डिजिटल समानता पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।

यह अध्ययन भारत के दो राज्यों- महाराष्ट्र और गुजरात- के शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में किया गया। एन.एस.डी. (Mixed Methods) का प्रयोग किया, जिसमें मात्रात्मक (quantitative) और गुणात्मक (qualitative) दोनों प्रकार की जानकारी एकत्र की गई ५०० छात्रों, शिक्षकों, सरकारी अधिकारियों और IT पेशेवरों से साक्षात्कार और प्रश्नावली द्वारा।

रिपोर्ट, नीति दस्तावेज़, और AI-प्रभावित सेवाओं पर प्रकाशित शोध लेखों से एकत्र किया गया। AI तकनीक ने शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्रों में पहुँच और दक्षता को बेहतर बनाया है। सुरक्षा और सार्वजनिक सेवाओं में स्वचालन से समय और संसाधनों की बचत हुई है।

हालांकि, AI के चलते कुछ पारंपरिक नौकरियों का हास हुआ, जिससे युवाओं में बेरोजगारी की दर बढ़ी। डिजिटल साक्षरता की कमी और संसाधनों की असमान उपलब्धता के कारण समाज में डिजिटल असमानता भी बढ़ी है। शोध में यह भी पाया गया कि युवाओं को AI के अनुकूल बनाने हेतु तकनीकी प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम आवश्यक हैं। आनंद, एन.डी., माथुर, ए.एम., एवं चौधरी, ए.सी.(२०२४) का अध्ययन दर्शाता है कि AI भारतीय शिक्षा प्रणाली में परिवर्तनकारी भूमिका निभा रहा है, विशेषकर पहुँच, वैयक्तिकरण और गुणवत्ता के संदर्भ में। AI-संचालित समाधान जैसे अनुकूली शिक्षण प्लेटफॉर्म, वर्चुअल ट्यूटर और स्वचालित प्रशासनिक प्रक्रियाएँ शिक्षण अनुभव को व्यक्तिगत और प्रभावी बना रही हैं। भारतीय शिक्षा प्रणाली में AI की भूमिका का मूल्यांकन करना। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, और कर्नाटक के तकनीकी विश्वविद्यालय। ३०० छात्रों और १०० शिक्षकों से ऑनलाइन सर्वेक्षण; केस स्टडी। AI-आधारित लर्निंग प्लेटफॉर्म ने युवाओं की सीखने की गति और समझ में वृद्धि की है। ग्रामीण क्षेत्रों के छात्र भी डिजिटल शिक्षा से जुड़ सके।

शर्मा, ए. एवं पटेल, आर. (२०२४) AI- आधारित सोशल मीडिया के युवा मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन। मुंबई और भोपाल में साइकोलॉजिकल टेस्टिंग और साक्षात्कार, २५० युवा प्रतिभागियों पर AI आधारित एल्गोरिथ्म युवाओं में डोपामिन आधारित व्यवहार को प्रेरित करते हैं, जिससे चिंता, अकेलापन और अवसाद की दरें बढ़ी हैं। AI-संचालित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं, जिससे चिंता, अवसाद, साइबरबुलिंग और सामाजिक अलगाव जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। ये प्लेटफॉर्म उपयोगकर्ताओं की मनोवैज्ञानिक कमजोरियों का लाभ उठाकर उनकी व्यस्तता बढ़ाते हैं, जो मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों को और खराब कर सकते हैं।

सिंह, पी. एवं गुप्ता, एल. (२०२४) AI का भारतीय युवाओं के रोजगार पर प्रभाव समझना। नोएडा, पुणे, बेंगलुरु। साक्षात्कार + रोजगार डेटा विश्लेषण। AI भारतीय युवाओं के रोजगार पर दोहरा प्रभाव डाल रहा है। एक ओर यह पारंपरिक नौकरियों को स्वचालित कर रहा है, जिससे कुछ नौकरियाँ समाप्त हो रही हैं; दूसरी ओर, यह स्वास्थ्य सेवा जैसे क्षेत्रों में नई भूमिकाएँ और उद्योगों का सृजन कर रहा है। युवाओं को इन परिवर्तनों के अनुकूल होने के लिए नए कौशल सीखने की आवश्यकता है। पारंपरिक IT नौकरियों में कमी, लेकिन AI और डेटा साइंस में नई भूमिकाओं का उदय।

राज, एन. एवं मिश्रा, पी. (२०२५) AI टेक्नोलॉजी अपनाने के प्रति छात्रों के व्यवहार का अध्ययन। भोपाल और लखनऊ के TAM मॉडल (Technology Acceptance Model) पर आधारित प्रश्नावली के उपयोग से AI भारतीय युवाओं के रोजगार पर दोहरा प्रभाव डाल रहा है। एक ओर यह पारंपरिक नौकरियों को स्वचालित कर रहा है, जिससे कुछ नौकरियाँ समाप्त हो रही हैं; दूसरी ओर, यह स्वास्थ्य सेवा जैसे क्षेत्रों में नई भूमिकाएँ और उद्योगों का सृजन कर रहा है। युवाओं को इन परिवर्तनों के अनुकूल होने के लिए नए कौशल सीखने की आवश्यकता है। सकारात्मक दृष्टिकोण, लेकिन संसाधनों की कमी तकनीकी अपनाने में बाधा।

वर्मा, एस. एवं जोशी, एम. (२०२४) ने विशेष शिक्षा में AI के प्रभाव का विश्लेषण दिल्ली और चेन्नई के विशेष विद्यालय में केस स्टडी+शिक्षकों का फीडबैक ली व AI-आधारित टूल्स से दिव्यांग छात्रों की समझ और सहभागिता में सुधार हुआ। AI तकनीक विशेष शिक्षा में भी सहायक सिद्ध हो रही है, जैसे बुद्धिमान ट्यूटोरिंग सिस्टम और अनुकूलनशील शिक्षण उपकरणों के माध्यम से। यह विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए सीखने में सहायता प्रदान कर रही है, जिससे समावेशी शिक्षा को बढ़ावा मिला है।

गुप्ता, आर. एवं मेहता, टी. (२०२४) AI से जुड़े नैतिक पहलुओं का विश्लेषण अखिल भारतीय नीति विश्लेषण अध्ययन दस्तावेज़ विश्लेषण + नीति निर्माताओं से साक्षात्कार द्वारा अध्ययन किया AI एल्गोरिद्म में पूर्वाग्रह, डेटा गोपनीयता की चुनौतियाँ प्रमुख रहीं। AI तकनीक के प्रयोग से संबंधित नैतिक समस्याएँ जैसे डेटा गोपनीयता, भेदभावपूर्ण एल्गोरिद्म और निर्णय प्रक्रिया की पारदर्शिता चिंता का विषय बनी हुई हैं।

शर्मा, के. एवं सिंह, ए. (२०२४) ने उच्च शिक्षा में AI का प्रभाव बनारस और जयपुर के छात्रों और प्रोफेसरों से फीडबैक के माध्यम से विश्लेषण किया। AI-आधारित शिक्षण ने समझ और आकलन की गुणवत्ता को बढ़ाया। AI ने उच्च शिक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जैसे व्यक्तिगत शिक्षण, आकलन और पाठ्यक्रम विकास में। यह तकनीक छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाती है।

मंडल, एस. (२०२४) AI की सहायता से विकलांग छात्रों की शिक्षा में सुधार का अध्ययन कोलकाता और हैदराबाद में विजुअल AI टूल्स और ब्रेल AI ट्यूटर का प्रयोग। AI ने विशेष आवश्यकता वाले छात्रों की आत्मनिर्भरता और प्रदर्शन में सकारात्मक बदलाव लाया। AI तकनीक विशेष शिक्षा में भी सहायक सिद्ध हो रही है, जैसे बुद्धिमान ट्यूटोरिंग सिस्टम और अनुकूलनशील शिक्षण उपकरणों के माध्यम से। यह विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए सीखने में सहायता प्रदान कर रही है, जिससे समावेशी शिक्षा को बढ़ावा मिला है।

गोयल, डी., खेरानी, ए. एवं सोनी, जी. (२०२४)- इस अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना था कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने भारतीय समाज के विभिन्न क्षेत्रों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और सेवाओं पर किस प्रकार प्रभाव डाला है। यह अध्ययन मुख्यतः महाराष्ट्र और गुजरात राज्यों में स्थित शहरी एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में किया गया। शोध के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि AI ने सेवा क्षेत्र की दक्षता और पहुँच को तो बढ़ाया, लेकिन इसके साथ ही बेरोजगारी, डिजिटल असमानता और डेटा गोपनीयता जैसे मुद्दों ने भी चुनौती दी है। युवाओं के लिए AI- आधारित कौशल विकास आवश्यक पाया गया। शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, और सेवाओं में गहरा प्रभाव डाला है। हालांकि बेरोजगारी और डिजिटल असमानता जैसी चुनौतियाँ भी आई हैं।

साहू, ए. (२०२२) भारतीय युवाओं की शिक्षा पर AI का प्रभाव को दिल्ली और रांची के २०० कॉलेज छात्रों पर साक्षात्कार और डेटा विश्लेषण Coursera, ChatGPT जैसे प्लेटफॉर्मों ने छात्रों को आत्मनिर्भर और रचनात्मक बनाया। साहू, ए. की यह पुस्तक भारतीय युवाओं की शिक्षा पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के प्रभाव का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। लेखक ने AI के विभिन्न पहलुओं, जैसे व्यक्तिगत शिक्षण, आकलन, और करियर मार्गदर्शन, पर ध्यान केंद्रित किया है। पुस्तक में AI-संचालित प्लेटफॉर्म जैसे Coursera, BYJU's, और ChatGPT, के माध्यम से शिक्षा में हो रहे परिवर्तनों की चर्चा की गई है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। शिक्षा में AI का एकीकरण: पुस्तक में बताया गया है कि कैसे AI तकनीकें शिक्षण विधियों को बदल रही हैं, जिससे शिक्षकों और छात्रों दोनों को लाभ

हो रहा है। व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव: AI के माध्यम से छात्रों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार सामग्री प्रदान की जा रही है, जिससे उनकी सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी हो रही है। करियर मार्गदर्शन: AI उपकरणों के माध्यम से छात्रों को उनके रुचियों और क्षमताओं के आधार पर करियर विकल्प सुझाए जा रहे हैं। Sahu की यह पुस्तक भारतीय शिक्षा प्रणाली में AI के बढ़ते प्रभाव को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है। यह शिक्षकों, नीति-निर्माताओं, और छात्रों के लिए उपयोगी है जो AI के माध्यम से शिक्षा में सुधार लाने के इच्छुक हैं।

शोध के उद्देश्य :

AI का युवाओं के मानसिक विकास पर प्रभाव।

शिक्षा प्रणाली में AI के उपयोग का असर।

रोजगार के क्षेत्र में AI के कारण उत्पन्न संभावनाएँ और चुनौतियाँ।

सोशल मीडिया और मनोरंजन के AI एल्गोरिथ्म से व्यवहार में बदलाव।

शोध विधि (Research Methodology):

गुणात्मक और मात्रात्मक पद्धति द्वारा १८ से ३० वर्ष आयु वर्ग के २०० युवक-युवतियाँ का ऑनलाइन सर्वेक्षण, साक्षात्कार, केस स्टडी के माध्यम से सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया।

चुनौतियाँ (Challenges):

- * डेटा गोपनीयता और सुरक्षा का संकट
- * रोजगार में असमानता और स्वचालन से बेरोजगारी
- * AI पर अत्यधिक निर्भरता

निष्कर्ष-

शिक्षा में AI का प्रभाव:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित एप्लिकेशन जैसे ChatGPT, Duolingo, BYJU's, और YouTube पर शैक्षणिक चैनल्स ने युवाओं की स्व-अधिगम क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि की है। AI प्लेटफॉर्म के माध्यम से छात्र अपनी रुचि, गति और समय के अनुसार अध्ययन कर पा रहे हैं। इससे व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव को बल मिला है, विशेषतः ग्रामीण और दूर-दराज़ के क्षेत्रों में, जहाँ पारंपरिक शिक्षकों की उपलब्धता सीमित है।

कई छात्रों ने बताया कि AI टूल्स ने उन्हें न केवल विषयवस्तु को समझने में मदद की, बल्कि परीक्षा की तैयारी, समय प्रबंधन और करियर मार्गदर्शन में भी सहायक सिद्ध हुए हैं। इससे शिक्षा अधिक समावेशी और परिणाम-उन्मुख हो गई है।

रोजगार के अवसरों पर प्रभाव:

AI और मशीन लर्निंग जैसे क्षेत्रों में दक्ष युवा तकनीकी नौकरियों में सफलतापूर्वक प्रवेश कर रहे हैं। विशेष रूप से डेटा एनालिटिक्स, साइबर सिक््योरिटी, हेल्थ टेक, और फिनटेक क्षेत्रों में नए अवसर उत्पन्न हुए हैं।

दूसरी ओर, AI के कारण कई पारंपरिक और दोहराव वाले कार्यों का स्वचालन हो गया है, जिससे कुछ क्षेत्रों में बेरोजगारी बढ़ी है। इससे यह स्पष्ट होता है कि AI युवाओं के लिए अवसरों के साथ-साथ चुनौती भी बनकर उभरा है। युवाओं को नई तकनीकों के अनुरूप पुनः प्रशिक्षण (Reskilling) और कौशल विकास (Upskilling) की सख्त आवश्यकता है।

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव:

AI संचालित सोशल मीडिया एल्गोरिथ्म, जैसे Instagram Reels, YouTube Shorts, और TikTok (जहाँ उपलब्ध), युवाओं में तात्कालिक संतुष्टि (instant gratification) की प्रवृत्ति बढ़ा रहे हैं। इससे उनमें ध्यान केंद्रण में कमी, नींद में बाधा, और आत्म-सम्मान में गिरावट जैसे लक्षण देखने को मिले हैं। AI एल्गोरिथ्म उपयोगकर्ताओं

की मनोवैज्ञानिक कमजोरियों को पहचानकर उन्हें उसी प्रकार की सामग्री बार-बार परोसते हैं, जिससे डोपामिन-संचालित व्यवहार बढ़ता है और वे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अत्यधिक समय बिताने लगते हैं। इसके कारण चिंता, अवसाद और सामाजिक अलगाव की समस्याएँ तेज़ी से बढ़ी हैं।

सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन:

युवाओं में परंपरागत संवाद जैसे प्रत्यक्ष बातचीत, सामूहिक गतिविधियाँ, और परिवारिक मेलजोल में कमी आई है। AI आधारित चैटबॉट्स, वर्चुअल असिस्टेंट्स और ऑनलाइन कम्युनिकेशन टूल्स ने सामाजिक व्यवहार को बदल दिया है। अब युवा अपने विचारों और भावनाओं को आभासी माध्यमों से अभिव्यक्त करने लगे हैं, जिससे भावनात्मक जुड़ाव और सहानुभूति जैसी मानवीय प्रवृत्तियाँ कमजोर पड़ रही हैं।

संवाद की संक्षिप्तता, emoji-आधारित अभिव्यक्ति, और डिजिटल पहचान के प्रति अत्यधिक लगाव ने वास्तविक जीवन में सामाजिक कुशलताओं (social skills) को प्रभावित किया है। कई युवाओं में सामाजिक भय (social anxiety) की शिकायत भी देखी गई।

सुझाव (Suggestions):

- * AI का उपयोग संतुलित रूप से किया जाए।
- * शैक्षणिक संस्थानों में AI साक्षरता को बढ़ावा दिया जाए।
- * युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य के लिए काउंसलिंग सेवाओं की उपलब्धता हो।
- * नीति-निर्माताओं को चाहिए कि वे AI के उपयोग के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश तय करें।

संदर्भ (References):

- * सिंह, आर. (२०२३). कृत्रिम बुद्धिमत्ता और युवा समाज. नई दिल्ली: भारत प्रकाशन।
- * UNESCO Report (2022) on Youth and AI.
- * भारतीय शैक्षणिक परिषद (२०२४)- AI का शिक्षा में प्रभाव।
- * Goyal, D., Kherani, A., & Soni, G. (2024). A Comprehensive Study on Impacts of AI on Society. IJERT, 13(2).
- * Anand, N.D., Mathur, A.M., & Chaudhary, A.C. (2024). Artificial Intelligence in Indian Education: * Transforming Teaching and Learning for the Digital Age. ResearchGate.
- * Sharma, A., & Patel, R. (2024). AI Algorithms and Youth Mental Health. SSRN.
- * Singh, P., & Gupta, L. (2024). AI and Youth Employment in India. RIS Policy Brief.
- * Raj, N. & Mishra, P. (2025). Adoption of AI in Higher Education: A Behavioural Study. SAGE Journals.
- * Verma, S., & Joshi, M. (2024). AI and Inclusive Education. PMC Articles.
- * Gupta, R. & Mehta, T. (2024). Ethics of AI in Youth-Oriented Systems. IJFMR.
- * Sharma, K., & Singh, A. (2024). AI in Indian Higher Education. IJSR.
- * Mandal, S. (2024). Special Needs and AI: A Technological Bridge. PMC.
- * Goyal, D., Kherani, A., & Soni, G. (2024). A Comprehensive Study on Impacts of AI on Society. IJERT, 13(2).
- * Sahu, A. (2022). Artificial Intelligence and its Influence on Indian Youth Education. Academic Scholar Press.

* <https://www.sciencedirect.com>

